स्पोर्ट शू

डा0 वसीम सिद्दीक़ी
10/8th Road North
Ahmadi - 61008
Kuwait

आज कल इक़बाल साहब बहुत खूबसूरत स्पोर्ट शू पहन कर टहलते थे। जूता बहुत आराम दे था। ये जूता वह अपने बेटे के लिये लाये थे जो बारहवीं का स्टूडेन्ट था। उसने वह जूता दो तीन दिन पहना लेकिन उसको बहुत तंग लगा। क्योकि पहन कर घूम लिया था। इस लिये वापस भी नहीं हो सकता था। लेकिन वह जूता इक़बाल साहब को बिलकुल फिट आ गया था बिलकुल जैसे उन्ही की नाप का हो। इक़बाल साहब बहुत सादा तबीअत के इन्सान थे। कोई मंहगी चीज पहनना पसंद नहीं था लेकिन उस जूते को वह बहुत इन्जवाय कर रहे थे। पहले तो उन्हें बहुत अटपटा सा लगा क्योकि जूता बहुत ही फैन्सी था। उस पर नीली और पीली पट्टियाँ बनी हुई थी लेकिन अब उसे बाक़ायदगी से पहन कर टहलने निकलते थे। वह सोच रहे थे कि जूता बहुत आराम दे है इसी लिये बहुत मंहगा है। नाइक ब्रान्ड का जूता चार हज़ार रूपये में मिला था। उन का मामूल था कि मग़्रिब की नमाज़ पढ़ने मस्जिद जाते थे और उस के बाद फिर इशा की नमाज़ पढ़ कर घर वापस आते थे। उन का Imported जूता गाड़ी के बूट में रखा रहता था। जब ठहलने जाते थे तो निकाल कर पहन लेते थे। मग़्रिब और इशा के दरमियान वह टहलते थे और उनकी कार वहीं मस्जिद के बाहर पार्किंग में खड़ी रहती थी। अक्सर इशा की नमाज़ के बाद मस्जिद के फाटक के बाहर खड़े खड़े दोस्तों से थोड़ी बहुत गपशप भी कर लिया करते थे।

आज नमाज़ के बाद वह मस्जिद के बाहर अपने दोस्तों से बात चीत कर रहे थे। कोई गरमा गरम टापिक निकल आया था। बात करने में काफी देर हो गई थी। अब वह अपनी कार की तरफ जा रहे थे तब ही उन्हे एक नौजवान कुछ परेशान सा नज़र आया जैसे इधर उधर कुछ ढून्ड रहा हो। कोई और होता तो कोई नोटिस नहीं लेता लेकिन क्योंकि इक़बाल साहब बहुत दर्दमन्द क़िस्म के इन्सान थे। इस लिये उस नौजवान से पूछा क्या बात है कुछ परेशान से लगते हो। जनाब मेरा जूता किसी ने चुरा लिया। अरे इक़बाल साहब ने अफसोस जताया। यहाँ इस तरह के वाक़यात तो होते नहीं। आज तक नहीं सुना कि किसी का जूता चोरी हुआ हो। हो सकता है कि कोई गलती से पहन गया होगा। वापस लेता आयेगा कल नमाज़ में आकर चेक कर लो उन्होंने उस नौजवान को मशवरा दिया था। सर मैं यहाँ नही रहता। बाहर से आया हूँ यहाँ मस्जिद के पास से गुज़र रहा था। नमाज़ का वक़्त हो गया। इस लिये नमाज़ पढ़ने के लिये रूक गया। रात की बस से वापस चला जाऊगा। अब वह जूता मुझे नहीं मिल सकता बहुत मंहगा जूता था। वह कुछ रोहाँसा सा हो गया। किस तरह का जूता था इक़बाल साहब ने उस से पूछा था। सर बिलकुल आप जैसा जूता था उसने कुछ झिझकते हुये जवाब दिया था। लेकिन सर ये ब्रान्ड शू होते हैं एक ही तरह के बहुत सारे, उसने कहा। इक़बाल साहब उसे बिलकुल कोई जूता चोर टाईप के आदमी नहीं लग रहे थे। तुम अब कैसे जाओगे। तुम्हारे पास तो पहनने को कुछ नहीं है। सर यहाँ वज़ू के लिये प्लास्टिक की चप्पलें पड़ी

हैं कोई भी पहन लूंगा। नहीं ऐसा करो तुम मेरा जूता ले लो मेरी कार में दूसरा जूता पड़ा हुआ है मैं उसे पहन लूंगा। इक़बाल साहब अपना जूता उतारने लगे थे। नहीं सर ये नहीं हो सकता आप क्यों अपना नुक़सान करें। अच्छा चलो तो मैं कार से निकाल कर दूसरा जूता तुम को दे देता हूँ वह बहुत ससता जूता है। लेकिन इक़बाल साहब के बहुत इसरार करने के बाद भी वह लड़का जूता लेने के लिये तैयार नहीं हुआ। इक़बाल साहब ने कहा अच्छा तो ऐसा करो थोड़ी देर यहीं इन्तिज़ार करो हो सकता है कोई गलती से पहन कर चला गया अभी वापस करने आ जाये । जी बहुत बेहतर ऐसा ही करूंगा । उस लड़के ने जवाब दिया था। इक़बाल साहब ने कार इस्टार्ट की और घर वापस चल दिये उस लड़के का जूता चोरी होने का उन्हे बहुत अफसोस हुआ था क्योकि उन्हे ऐसे जूते की क़ीमत मालूम थी। घर पहुंचने में उन्हे थोड़ी देर हो गई क्योंकि रास्ते में बुक स्टोर के पास गाड़ी खड़ी करके उन्होंने कुछ किताबै खरीदी थी। घर पहुंचकर उन्होंने पूरटेको में गाड़ी खड़ी की और अपना स्पोर्ट शू उतार कर कार की बोट खोलकर उसमें रखने लगे। ये क्या वह बहुत ज़ोर से चौंक गये। उन का स्पोर्ट शू तो पहले ही से उन के कार के बोट में रखा था। अरे वह उस लड़के का जूता पहन कर आ गये। वह कार में बैठ कर दोबारा मस्जिद की तरफ आ गये थे। उस लड़के का दूर दूर कहीं पता नहीं था।

★★★